भगत नामदेव - सबद २४

नाद भ्रमे जैसे मिरगाए ॥

रागु गोंड, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ८७३

नाद भ्रमे जैसे मिरगाए ॥
प्रान तजे वा को धिआनु न जाए ॥१॥
ऐसे रामा ऐसे हेरउ ॥
रामु छोडि चितु अनत न फेरउ ॥१॥ रहाउ ॥
जिउ मीना हेरै पसूआरा ॥
सोना गढते हिरै सुनारा ॥२॥
जिउ बिखई हेरै पर नारी ॥
कउडा डारत हिरै जुआरी ॥३॥
जह जह देखउ तह तह रामा ॥
हरि के चरन नित धिआवै नामा ॥४॥२॥

सार: एकाग्रता की अवधारणा पर दार्शनिक दृष्टिकोण यह दिखाता है कि यह उच्चतर जागरूकता की ओर ले जाने वाला मार्ग है। ध्यान की स्थिरता मनुष्य को अपने आस-पास की उथल-पुथल से ऊपर उठने में सक्षम बनाती है जिससे ध्यान भटकाने वाली चीज़ें दूर हो जाती हैं। यह तल्लीनता जो एक प्रकार की पारलौकिक अवस्था है, व्यक्ति को वर्तमान क्षण में पूरी तरह से लीन होने की ओर ले जाती है। यह विचार सजगता के सिद्धांतों के अनुरूप है जो संतुष्टि और स्पष्टता प्राप्त करने के लिए किसी काम में पूरी तरह से संलग्न होने के महत्व को रेखांकित करता है। इस दृष्टिकोण से, एकाग्रता केवल मानसिक कौशल नहीं बल्कि यह मानवीय अनुभव का अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है, जो रचनात्मकता, उत्पादकता और गहन समझ को विकसित करता है।

नाद भ्रमे जैसे मिरगाए ॥

आवाज़ से मोहित होकर, हिरण उसकी तलाश करता है। यह अनदेखी, सर्वव्यापी सत्ता के प्रति भक्ति की उस अवस्था को दर्शाता है जिसमें साधक बाहरी भटकावों से पूरी तरह बेखबर हो जाता है।

प्रान तजे वा को धिआनु न जाए ॥१॥

जीवन समाप्त होने पर भी उसका ध्यान विचलित नहीं होता। यह उस मनःस्थिति को दर्शाता है जिसमें मूल्यवान गुण परिस्थितियों से परे स्थिर बने रहते हैं। (१)

ऐसे रामा ऐसे हेरउ ॥

इसी प्रकार मैं उस परम् सत्य का दर्शन करता हूँ। यह उस आध्यात्मिक एकाग्रता को प्रकट करता है जो अडिग चिंतन के साथ एकत्व को पहचानती है।

रामु छोडि चितु अनत न फेरउ ॥१॥ रहाउ ॥

उस परम-सत्य के अलावा, मैं अपनी चेतना को कहीं और केंद्रित नहीं करता। यह उस दृढ़ संकल्प को दर्शाता है कि मन को द्वैत के भ्रमों से भटकने नहीं देना है। (१)(विराम)

जिउ मीना हेरै पसूआरा ॥

जैसे मछुआरा मछली को एकटक देखता रहता है। यह उस चौकस ध्यान का प्रतीक है जो ज्ञान के सार को ग्रहण करने में अडिग रहता है।

सोना गढते हिरै सुनारा ॥२॥

सोने को आकार देते समय, सुनार उसे बहुत सावधानी से देखता है। यह उस विवेकपूर्ण ध्यान को दर्शाता है जो अनुभवों को मूल्यवान अंतर्दृष्टि में रूपांतरित करता है। (२)

जिउ बिखई हेरै पर नारी ॥

जैसे कोई कामुक व्यक्ति किसी दूसरे की पत्नी पर बुरी नज़र रखता है। वर्जित आकर्षण का यह रूपक प्रतीकात्मक रूप से उस मन को दर्शाता है जो अपनी इच्छा के विषय से खुद को अलग नहीं कर पाता।

कउडा डारत हिरै जुआरी ॥३॥
जुआरी पासा फेंकते समय उस पर गहरी दृष्टि रखता है। यह उन लोगों की तीव्र एकाग्रता का प्रतीक है जो आध्यात्मिक जागृति की तलाश में हैं क्योंकि उनका आध्यात्मिक भाग्य इसी पर निर्भर करता है। (३)

जह जह देखउ तह तह रामा ॥
मैं जहाँ भी देखता हूँ, मुझे सर्वव्यापी परम-सत्य ही दिखाई देता है। यह अद्वैतवादी दृष्टिकोण को प्रकट करता है जिससे यह बोध होता है कि विविधता में एकता ही एकमात्र सत्य है।

हरि के चरन नित धिआवै नामा ॥४॥२॥
नामदेव कहते हैं कि वह अत्यंत विनम्रता के साथ, उस सर्वव्यापी परम-सत्ता का निरंतर ध्यान करते हैं। यह पुष्टि करता है कि जीवन में स्थिरता केवल उस 'एकत्व के साथ अपना जुड़ाव बनाए रखने से ही प्राप्त होती है। (४)(२)

तत्त्व: भक्त नामदेव यह दर्शाते हैं कि हर इंसान में एकाग्रता की स्वाभाविक शक्ति होती है लेकिन यह जानना बेहद ज़रूरी है कि इसे किस दिशा में लगाया जाए। वह दैनिक जीवन के उदाहरणों, ध्वनि से मोहित हिरण, मछली पर केंद्रित मछुआरा और अपने दाँव पर टिका जुआरी, के माध्यम से एकनिष्ठ ध्यान के महत्व को स्पष्ट करते हैं। अगर हम उसी लगन और उत्साह को अपनी आध्यात्मिक यात्रा में लगाएँ तो हम जागरूकता के मार्ग को और भी आसानी से खोज सकते हैं। वह हमें प्रेरित करते हैं कि हम इस एकाग्र ध्यान का उपयोग व्यक्तिगत विकास और गहन समझ के लिए करें।

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com